शिवजयंती

धरती पर आये प्रभु शिव भगवान***
गीता के हुए सत्य वचन फिर आज***
कल्प का अंत होने को आया**
दूर हुआ माया का परछाया***
अज्ञान अन्धकार मिटा***
ज्ञान सूर्य जब हुआ प्रकट***
सरल हुआ था सब जो था विकट***
शिव पिता का हुआ अवतरण***
ब्रह्मा तन की ली जो शरण***
मुख कमल से जन्मा ब्राह्मण***
दिया इस बुढ़े तन को आकर्षण***
दिखाया सब को ज्ञान का शुद्ध दर्पण***
किया तन मन धन और बुद्धि को समर्पण***
मिटा पापाचार भ्रष्टाचार और अत्याचार***
मिला जब ज्ञान करने का सद व्यहवार**
आत्मा की जंक मिटी हुआ उसका गुणों

से श्रंगार***
शिव है कल्याण कारी परोपकारी निरहंकारी
निर्विकारी निराकारी***
हम बच्चे उसके होते संगम पर उनके
आभारी***
मिलती हमको मुक्ति जीवनमुक्ति हो कर
बलिहारी***आत्मा का दीपक है